सुमतिर्नूयताम्।। क्र० १/८६/२

ISSN : 2395-7115
July 2022
Issue 16, Vol. 1

Impact Factor
5.642

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

आज़ादी का अमृत महोत्सव

डी.आर. माने महाविद्यालय, कागल (महाराष्ट्र)

आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष के उपलक्ष्य में प्रकाशित विशेषांक
राष्ट्रीय एकता और अखंडता में हिंदी साहित्य का योगदान

विशेषांक सम्पादक : प्रो. हसीना अ. मालदार
सम्पादक : डॉ. नरेश सिहाग, एडवोकेट
सह सम्पादक : प्रो. सचिन कांबले, प्रो. तेजस्विनी शितोले

Publisher :
Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)
202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021

JOURNAL OF HUMANITIES, COMMERECE, SCIENCE, MANAGEMENT & LAW

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Vol. 16 ISSUE- 1(1) (जुलाई 2022) ISSN : 2395-7115

प्रेरणा :

चौ. एम. सिहाग

सम्पादक :

डॉ. नरेश सिहाग 'बोहल', एडवोकेट

एम.ए. (समाजशास्त्र, लोक प्रशासन, हिन्दी शिक्षा शास्त्र, पत्रकारिता),
एम.फिल (समाजशास्त्र, हिन्दी) एम. लिब., एल–एल.बी. (ऑनर्स),
डिप्लोमा पंचायती राज (रजत पदक विजेता), पी.एच.डी. (हिन्दी)

विभागाध्यक्ष हिन्दी एवं शोध निर्देशक

टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर–335001 (राज.)

प्रकाशक :

गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	प्रा. हसीना अ. मालदार	10–10
2.	राही मासूम रजा के उपन्यासों में राष्ट्रीय एकता	प्रा. हसीना मालदार	11–13
3.	तमस में राष्ट्रीय एकता	प्रा. सचिन मधुकर कांबळे	14–16
4.	हिंदी गजल में राष्ट्रीय चेतना	प्रा. डॉ. बी.बी. आगेडकर प्रा. डॉ. संतोष कोळेकर	17–19
5.	सोहनलाल द्विवेदी की कविता एवं राष्ट्रीय एकता की भावना	डॉ. प्रिया ए.	20–24
6.	राष्ट्रीय एकता और अखंडता में हिंदी ग़ज़ल साहित्य का योगदान	श्री.भिकाजी व्हन्नाप्पा कांबळे	25–28
7.	दिनकर जी के काव्य में चित्रित राष्ट्रीय एवं सामाजिक चेतना	प्रा. डॉ. संजय पिराजी चिंदगे	29–32
8.	डॉ हरिशंकर आदेश के महाकाव्य में राष्ट्रीय एकता और अखंडता ('अनुराग' महाकाव्य के विशेष संदर्भ में)	प्रा० डॉ. वसुंधरा उदयसिंह जाधव	33–38
9.	कवि नीरज के काव्य में राष्ट्रीय एकता का संदेश	डॉ. भोसले जी.एस.	39–42
10.	स्वातंत्र्योत्तर नाटकों में राष्ट्रीय-चेतना	डॉ. रमेशकुमार गवळी	43–47
11.	राष्ट्रीयता एकता और अखंडता में हिंदी कविताओं का योगदान	इंदिरा.वी	48–51
12.	'स्कंदगुप्त' नाटक में राष्ट्रीय चेतना	डॉ. मीनाक्षी चौधरी	52–54
13.	राष्ट्रीय एकता की संवाहिका : हिंदी कविता (कवि माखनलाल चतुर्वेदी के संदर्भ में)	प्रा.डॉ.संजीवनी संदीप पाटील.	55–59
14.	राष्ट्रीय एकता और अखंडता में हिंदी नाटकों का योगदान	डॉ. सौदागर सालुंखे	60–63
15.	राष्ट्रीय एकता और अखंडता में हिंदी साहित्य का योगदान	सौ. सुगंधा हिंदुराव घरपणकर	64–66
16.	राष्ट्रीय एकता और अखंडता में कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर के साहित्य का योगदान	प्रा डॉ द्वारका सुदाम गिते	67–69
17.	राष्ट्रीय एकता में विवेकानन्द के विचारों की प्रासंगिकता (नरेंद्र कोहली और राजेंद्र मोहन भटनागर के जीवनीपरक उपन्यासों के सन्दर्भ में)	प्रा. सुधाकर हंडी	70–76
18.	भारतीय अखंडता को बनाए रखने में व्यसन गोष्ठियों का योगदान	डॉ. महादेवी कणवी	77–78
19.	राष्ट्रीय एकता और अखंडता में हिंदी नाटकों का योगदान	पठाण वजीर सुलताना खाजा खान	79–82
20.	राष्ट्रीय एकता और अखंडता में हिंदी गजलों का योगदान	सौ. रेशमा गणेश लौंढे	83–86
21.	राष्ट्रीय एकता और अखंडता में महाकवि निरालाजी का योगदान	प्रा. सौ. मानसी संभाजी शिरगांवकर	87–94

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 5.642

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
July 2022 Page No. : 55-59

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY
& MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

राष्ट्रीय एकता की संवाहिका : हिंदी कविता

(कवि माखनलाल चतुर्वेदी के संदर्भ में)

प्रा.डॉ.संजीवनी संदीप पाटील.

हिंदी विभाग प्रमुख, कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, गडहिंग्लज. तह. गडहिंग्लज, जि.कोल्हापुर

प्रस्तावना :-

एक सूत्र में बांधे सबको हिंदी बड़ी महान है।
हिंदी की महिमा है न्यारी हिंदी हिंदुस्तान है।।
हिंदी की संतान है– अजीज जौहरी

भाषा सिर्फ संप्रेषण का साधन मात्र नहीं है, अपितु हमारे भाव जगत की साकार प्रतिमा है। भाषा संस्कृति की बुनियाद होती है। भाषा एक समग्र अस्मिता का साधन होती है। भाषा के साथ उसके बोलने वालों की संस्कृति और संस्कार जुड़े होते हैं। हिंदी हमारे देश की सामाजिक संस्कृति की भाषा है। हिंदी के प्रति आदर, आस्था और विश्वास ही देशभक्ति है। हिंदी को आधार बनाकर उस के माध्यम से राष्ट्र की एकता तथा अखंडता को बनाए रखना परम आवश्यक है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भारत के अग्रिम नेताओं ने विशेष रूप से महात्मा गांधी ने राष्ट्रभाषा के रूप में इसकी पहचान की और इसे अपने आंदोलन का अंग बनाया। स्वतंत्रता संग्राम के समय राष्ट्रीय एकता की जो प्रबल भावना देशवासियों में विद्यमान थी वह केवल हिंदी के कारण ही।

हिंदी के महत्व को प्रतिपादित करते हुए श्री.नर्मदेश्वर चतुर्वेदी ने अपने ग्रंथ 'हिंदी का भविष्य' में कहा है, "हिंदी वास्तव में किसी एक ही भाषा अथवा बोली का नाम नहीं है; अपितु एक सामाजिक भाषा परंपरा की संज्ञा है, जिसका आकार–प्रकार विभिन्न उपभाषाओं और बोलियों के ताने–बाने द्वारा निर्मित हुआ है।"[1] हमारी आजादी के प्रतीक तथा राष्ट्रीय संप्रभुता के राष्ट्रीय ध्वज एवं राष्ट्रगीत की तरह ही हमारी आजादी की पहचान राष्ट्रभाषा हिंदी है। भारत पर कई बार विदेशी आक्रमण हुए हैं फिर भी इस देश की संस्कृति नष्ट नहीं हो पाई। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का एक लंबा इतिहास है। 1857 से लेकर 1947 तक आजादी की जंग चल रही थी। मुगलों के लंबे शासन के बाद भारत पर ब्रिटिशों ने हुकूमत चलाई। 1600 ई.स.वी. में व्यापार करने के बहाने से अंग्रेज हमारे देश में आए और यहां के सत्ताधिश बन गए। अंग्रेजों ने न केवल भारत में शासन किया बल्कि यहां की संस्कृति को तहस–नहस कर दिया। अंग्रेजों के जुल्म से लोग उनके खिलाफ आवाज उठाते तो उन्हें मौत के घाट उतार दिया जाता। वे भारतीयों को मात्र अपने गुलाम मानते रहें। अंग्रेजों के जुल्मों से तंग आकर भारत में 1857 में पहली बार स्वाधीनता की चेतना जगी और आजादी की लड़ाई शुरू हुई।

तो दूसरी तरफ भारतीय राष्ट्रवाद का उदय भी हुआ। भारतीय बुद्धिजीवी इस लड़ाई के अगुआ बने। आजादी की यह जंग कई मोर्चों पर चल रही थी। राजनीतिक रूप से, संगठित शक्ति से, तो दूसरी तरफ देश के साहित्यकार देशवासियों में राष्ट्रप्रेम का जज्बा पैदा कर रहे थे। वे देश के नायकों को राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए अपनी लेखनी से उदित कर रहे थे। छोटे–छोटे जुल्फों में राष्ट्रप्रेम के जागरण गीत गा रहे थे। इन गीतों के कारण ही आजादी के तराने हर भारतीय के मन में गूंज रहे थे। गांधी का चरखा राष्ट्र के स्वाभिमान का प्रतीक बन गया था। लोकमान्य तिलक कह रहे थे स्वाधीनता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है तो भारतेंदु हरिश्चंद्र हिंदी के पक्ष में अलख जगा रहे थे।

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को शूल।।"[2]

भारतेंदु युगीन रचनाकारों में प्रेमधन, प्रताप नारायण मिश्रा, बालमुकुंद, बालकृष्ण भट्ट, बाबू गुलाब राय, हरिओम शरण, मैथिलीशरण गुप्त, सुभद्रा कुमारी चौहान, रविंद्रनाथ टैगोर आदि सब साहित्यकार मिलकर स्वाधीनता का एक वातावरण पैदा कर रहे थे। जैसे कि, महान क्रांतिकारी नेता राम प्रसाद बिस्मिल ने "सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है, देखना है जोर कितना बाजुए कातिल में है "द्वारा अंग्रेजों को आगाह किया था।

राष्ट्रीय एकता की संवाहिका : कविता – मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' और रामधारी सिंह दिनकर आदि हिंदी राष्ट्रीय काव्य धारा के प्रमुख स्तंभ है। माखनलाल चतुर्वेदी जी समसामायिक युगदृष्टा एवं राष्ट्रीय स्वर को उजागर करने वाले सच्चे राष्ट्रीय कवि थे। उनके काव्य में अनन्य देशप्रेम और निश्चल समर्पण की भावना दिखाई देती है। यही देश प्रेम कालांतर में उनके जीवन का एक शक्तिशाली स्वरबन गया। माखनलाल चतुर्वेदी जी ने अंग्रेजों की हुकूमत से छुटकारा पाने हेतु तन–मन–धन तथा कलम से मातृभूमि की सेवा की। देशप्रेम की भावना उनमें कूट–कूट कर भरी थी। उनके जीवन का प्रथम लक्ष्य केवल राष्ट्रहित था। 'एक भारतीय आत्मा' के नाम से उन्होंने साहित्य सृजन किया। विदेशी सत्ता को उखाड़ फेंकने तथा लोगों को संगठित करने हेतु उन्होंने कहा,

"केरल से कश्मीर तलक है हम भाई–भाई,
कावेरी, कृष्णा की नर्मदा, गंगा, यमुना साथ रहे।
हमें ना तोड़ सकेगा कोई हमें मां के जाए बन्धु रहे,
चरण–चरण चल पड़ी मातृ–भू–वरण–वरण संतान लिय।।"[3]

महात्मा गांधी जी उनके आदर्श थे। सन 1914 में महात्मा गांधी जी सत्याग्रह संग्राम चला रहे थे। माखनलाल चतुर्वेदी जी ने अपनी आस्था एवं श्रद्धा उनके प्रति व्यक्त करते हुए आजादी के स्वर में और भी उत्साह एवं स्फूर्ति की नई लहर पैदा करते हुए जन–जन को जागृत करने का प्रयास किया था।

"क्यों पड़ी परतंत्रता की बेड़ियॉं?
दासता की हाय हथकड़ियां पड़ी।
न्याय के 'मुहॅं बंद' फॉंसी के लिए,

कंठ पर जंजीर की लड़ियॉ पड़ी।।"[4]

जब अंग्रेजों ने भारत पर अपना पूरा अधिकार जमा कर लिया था और वह व्यापार के बहाने धीरे–धीरे भारतीय संस्कृति एवं मूल्यों को तहस–नहस कर रहे थे। भारत का अस्तित्व मिटाने की कोशिश कर रहे थे। तब कवि चतुर्वेदी जी ने बड़े ही जोश के साथ उन्हें ललकारा था–

"क्या कहा कि यह घर मेरा है?
जिसके रवि उगे जेलों में संध्या होवे विरानो में,
उसके कानों में क्या कहते आते हो? यह मेरा घर है।।
हो मुकुट हिमालय पहनता, सागर जिसके पद धुलवाता,
यह बंधा बेडियों में मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा मेरा है।
क्या कहा कि यह घर मेरा है।"[5]

जैसे –जैसे अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों बढ रही थी। भारतीयों के सब्र का बांध टूट रहा था। उनमें डर और आतंक फैल रहा था। उस समय चतुर्वेदी जी ने भारतीय जनमानस को बलिदान तथा सर्वस्व न्यौछावर करने के लिए प्रेरित करते हुए कहा–

"बेटे बलिदान हो/ माता की गई लाज मिले/ होऊ आजाद हो–/कांटों को भले, ताज मिले/
शेष महीने है, जोरहो तो/ सज– बाज मिले/मर के दिखला दो तो/प्यारे तुम्हें स्वराज्य मिले।"[6]

ब्रिटिशों के अन्याय–अत्याचार के खिलाफ लड़ने के लिए तथा स्वतंत्रता की जंग में शामिल होने के लिए चतुर्वेदी जी भारतीय युवाओं को आवाज देते है। कठोर यातना सहने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। साथ ही साथ स्वतंत्रता संग्राम में उन्हें सम्मिलित होने का आवाहन भी करते हैं। जैसे कि–

"ब्रिटिश निशानों पर/ विपदा के वाणों पर/मेरे प्यारे प्राणों पर/ खेल चल भाई/
जेल चल, जेल चल, जेल चल भाई।।"[7]

देश की रक्षा करते हुए अपने प्राणों का बलिदान देने वाले स्वतंत्रता सेनानियों के प्रति अपनी आस्था प्रकट करते हुए, साथ ही साथ उनके बलिदान को स्मरण करते हुए चतुर्वेदी जी कहते हैं कि–

"मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर देना तुम फेंक
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जावें वीर अनेक।।"[8]

राष्ट्र का उत्थान तभी संभव है जब सामाजिक विषमता का अंत हो। समाज में शोषक और शोषित ना हो। सभी में समानता विद्यमान हो। तभी जनकल्याण एवं राष्ट्र उत्थान का सपना साकार हो सकता है। इसीलिए कवि कहते हैं कि,

"महलों पर कुटियों की वारों/पकवानों पर दूध–दही।"[9]

सामाजिक विषमता जब तक समाप्त नही हो जाती तब तक हम आजाद नहीं हो सकते यह बात वे जानते थे। महात्मा गांधीजी के असहयोग आंदोलन में वह सक्रियता से सम्मिलित हो चुके थे। स्वदेशी वस्तुओं का इस्तेमाल करने के लिए वे स्वदेशानुराग की भावना को जनता में जगाने का काम कर रहे थे। माखनलाल जी का मानना था कि विदेशी शोषण और अत्याचार के खिलाफ जिस व्यक्ति के हृदय में ज्वाला ना धधके तो

वह कैसा भारतीय है? उसका जीवन ही निरर्थक है, वह मृत सदृश्य है। वे कहते हैं कि–

"द्वार बलि का खोल/चल भूडोल कर दे/एक हिम–गिरि एक सिर/का मोल कर दें,/ मसलकर, अपने इरादों–सी, उठाकर, दो हथेली हैं कि/ पृथ्वी गोल कर दें/ रक्त है या नसों में क्षुद्र पानी।/ जांच कर,तू सीस दे–देकर जवानी।"[10]

ब्रिटिश शासकों के अन्याय अत्याचार का विरोध करते हुए भी भारतीय युवाओं को प्रोत्साहित करते हुए कहते हैं। माखनलाल चतुर्वेदी जी आजादी के लिए बहुत चिंतित रहते थे। लगातार वे इस विषय में चिंतन मनन करते थे। इसी कारण 1908 में हिंदकेसरी में आयोजित राष्ट्रीय आंदोलन और बहिष्कार निबंध प्रतियोगिता में उनको पहला स्थान मिला। अपने भारत देश की गरिमामई संस्कृति का वर्णन भी उन्होंने अपनी कई कविताओं में किया है।

"प्यारे भारत देश/गगन–गगन तेरा यश फहरा/ पवन–पवन तेरा बल गहरा/
क्षिति–जल–नभ पर डाल हिंडोले/ चरण–चरण संचरण सुनहरा।।"[11]

माखनलाल चतुर्वेदी जी का व्यक्तित्व अद्भुत था। वे कर्म से योद्धा, बुद्धि से चिंतक, दिल से कवि, स्वभाव से संत और अद्भुत बेजोड़ प्रवक्ता थे। उनका संपूर्ण जीवन और चिंतन भारतीय समाज की रक्षा करने और संवारने के संदर्भ में अभिव्यक्त हुआ है। माखनलाल जी का जीवन जनसाधारण नहीं था। उन्होंने अपने जीवन में हमेशा संघर्ष ही किया है। वे अपने संघर्षरत जीवन के बारे में कहते हैं कि–"

सूली का पथ ही सीखा हुं, सुविधा सदा बचाता आया।
मैं बलि पथ का अंगारा हूं, जीवन ज्वाला जलाता आया।।"[12]

निष्कर्ष :-

किसी भी राष्ट्र की उन्नति का सीधा संबंध उसकी भाषा से होता है। भाषा ही है जो एक राष्ट्र को अन्य से अलग करते हुए उसे एक विशिष्ट पहचान देती है। तभी तो कहा गया है कि, "निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल"। भाषा वही महत्वपूर्ण होती है जो लोगों को तोड़ने के बजाय जोड़ने का संदेश देती है। जिसके माध्यम से प्रेम का मार्ग प्रशस्त हो जाता है। समान भाषा लोगों को एकत्र लाने का, विचारों का आदान प्रदान करने का, अनुभव तथा एकात्मता बढ़ाने का सशक्त माध्यम है।

माखनलाल चतुर्वेदी जी सरल भाषा और ओजपूर्ण भावनाओं के अनूठे हिंदी रचनाकार थे। राष्ट्रीयता माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य का कलेवर है तथा रहस्य प्रेम उनकी आत्मा है। माखनलाल जी जीवन भर पतझड़ झेलते रहे पर दूसरों के लिए हमेशा उन्होंने बसंत की कामना की है। वह ऐसे क्रांतिदृष्टा थे जिन्होंने जीवन के हर क्षेत्र में संघर्ष किया। आजादी की जंग में सक्रिय रूप से अपनी कलम के माध्यम से सम्मिलित होने वाले माखनलाल चतुर्वेदी जी ने अपनी कविताओं के माध्यम से लोगों में राष्ट्रभक्ति, देशप्रेम जगाया है। साथ ही साथ उन्होंने भारतीय लोगों को एकता–अखंडता का संदेश भी दिया है। माखनलाल चतुर्वेदी जी का संपूर्ण जीवन देश के लिए समर्पित था।

माखनलाल चतुर्वेदी जी केवल साहित्यकार नहीं थे; बल्कि वे एक स्वतंत्रता सेनानी, क्रांतिकारी कवि और निर्भीक पत्रकार थे। वह कर्म से योद्धा,बुद्धि से चिंतक और दिल से कवि स्वभाव के संत और अद्भुत बेजोड़

प्रवक्ता थे। भारतीय समाज की रक्षा करने और संवारने के संदर्भ में उनका संपूर्ण जीवन और चिंतन अभिव्यक्त हुआ है। स्वतंत्रता संग्राम के एक सच्चे स्वतंत्रता सेनानी ने पूरी जीवन भर अपनी कलम के माध्यम से स्वतंत्रता की जंग में अपनी भूमिका निभाई।

संदर्भ :-

1. हिंदी का भविष्य : श्री. नर्मदेश्वर चतुर्वेदी।
2. विश्व स्नेह समाज –वर्ष 21, अंक 1,सितंबर 2021, पृ. 42
3. माखनलाल चतुर्वेदी, एक चिंतन–डॉ. रंजन, पृ. 24
4. माखनलाल चतुर्वेदी, यात्रा पुरुष ,पृ. 368
5. माखनलाल चतुर्वेदी, रचनावली भाग–6, पृ. 168
6. माखनलाल चतुर्वेदी, माता, पृ. 67–68
7. माखनलाल चतुर्वेदी, रचनावली भाग–6, पृ. 95
8. https://www.hindi-kavita.com
9. माखनलाल चतुर्वेदी, रचनावली भाग–6, पृ. 152
10. Hindi-Kavita.com/Hindi Samarpan
11. प्यारे भारत देश– माखनलाल चतुर्वेदी।
12. Hindi-Kavita.com/Hindi Samarpan

मो.नं–9545227228

ईमेल– patilssu@gmail.com